हिंदी (लोकवाणी)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 4 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1) (i)

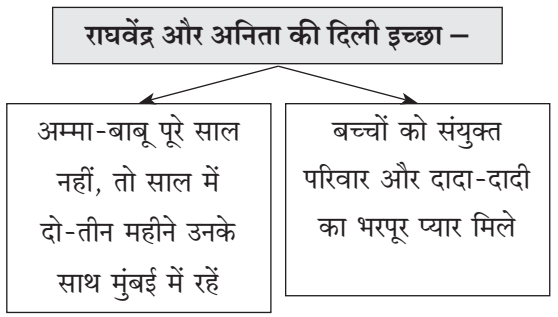

(ii)

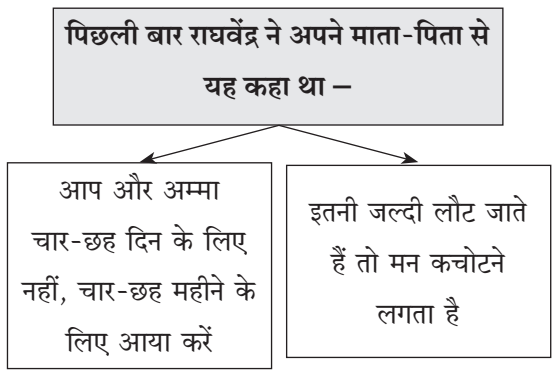

(2) (i) पत्नी-बच्चों (ii) अम्मा-बाबू
(iii) दादा-दादी (iv) चार-आठ।

(3) प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है कि उनकी संतान पढ़-लिखकर बड़ा ओहदा पाए और सुख से रहे। इसके लिए वह जमीन-आसमान एक कर देते हैं। अपनी इच्छा पूरी हो जाने पर माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। पर कुछ दिनों के बाद ही उनकी यह खुशी धुँधली पड़ने लगती है, जब उनका बेटा नौकरी करने किसी शहर में खुद तो चला ही जाता है, अपने साथ अपनी पत्नी को भी ले जाता है और माता-पिता को न चाहते हुए भी अकेला कर जाता है। बेटा-बहू नौकरी से अधिक दिनों की छुट्टी लेकर माता-पिता के साथ ज्यादा समय बिता नहीं पाते हैं और माता-पिता अपनी जन्मभूमि के मोह में बेटे-बहू के साथ शहर में अधिक दिन या स्थायी रूप से रह नहीं सकते हैं। इसलिए कुछ दिन बेटे-बहू के साथ रहकर उन्हें अपनी जन्मभूमि के लिए रवाना हो जाना पड़ता है। इस तरह माता-पिता को बेटा-बहू, पोते-पोतियाँ होते हुए भी अकेलेपन में अपनी जिंदगी काटनी पड़ती है। अकेलेपन का यह दुख उनके लिए बहुत कष्टदायी होता है जिसके बिना रहा भी नहीं जा सकता है और जिसे सहा भी नहीं जा सकता है।

प्र. 1. (आ)

(1) (i) (1) शोभा सिंह ने सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् का क्रम बदला है। – **सही**

(2) चित्रकार रंगों और पेंसिल के माध्यम से अपनी कल्पना को कैनवस पर उतारता है। – **गलत**

(ii) (1) सुंदरता के लिए नजर सबसे पहली अवस्था है।

(2) शोभा सिंह ने परछत्ती को धो-पोंछकर अपना घर बनाया था।

(2) (i) नजर – नजरें (ii) पौधे – पौधा

(iii) हँड़ियाँ – हाँड़ी (iv) कल्पना – कल्पनाएँ।

(3) सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् अर्थात जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है, वही सत्य है। दूसरे अर्थ में इंद्रियों द्‌वारा देखना, सुनना, जानना और अनुभव करना सत्य है। एक अन्य अर्थ में इस प्राणी जगत के एक अंश के रूप में स्वयं के होने का अहसास ही सत्य है। शिव का अर्थ है शुभ अर्थात जो सत्य होगा तो उससे जुड़ा शुभ भी होगा। सर्वशक्तिमान आत्मा ही शिवम् है। यह संपूर्ण प्रकृति सुंदरम् है। इस दिखाई देने वाले जगत को प्रकृति का रूप कहा गया है। प्रकृति हमारे स्वभाव और गुण को प्रकट करती है। इस प्रकार सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् का अर्थ इस प्रकार हुआ – शिव की उपस्थिति भौतिक है। वे हम सबके भीतर हैं। शिवम् अर्थात कल्याणकारी, सब कुछ दे देने वाला। चूँकि हम सब शिव के अंश हैं इसलिए हमें त्याग की भावना रखनी चाहिए। सुंदरम् अर्थात सुंदर। शिव की कृपा से हमें यह सुंदर संसार मिला है, हमें इसे और सुंदर बनाना है।

प्र. 2. (अ)

(1)

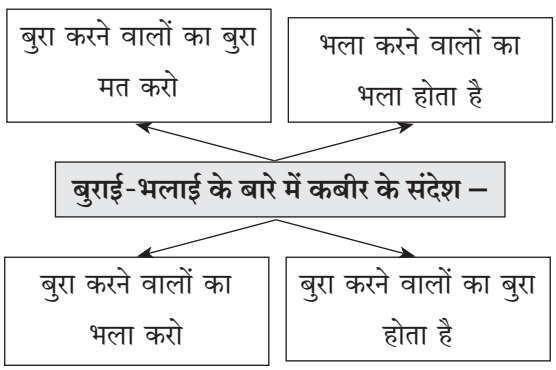

(2) संत कबीर कहते हैं कि मनुष्य की हालत कस्तूरी मृग की तरह है। कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है, लेकिन हिरन को इसकी जानकारी नहीं होती। वह उसकी सुगंध से अभिभूत होकर उसे प्राप्त करने के लिए जंगल-जंगल ढूँढ़ता फिरता है। परंतु अज्ञानवश उसे यह जानकारी नहीं होती कि कस्तूरी तो उसके भीतर विद्‌यमान है। इसी प्रकार ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के शरीर में विद्‌यमान है, लेकिन मनुष्य अज्ञानवश उसे यहाँ-वहाँ (बाहर) ढूँढ़ता फिरता है। वह अपने अंदर विद्‌यमान ईश्वर को नहीं पहचान पाता।

प्र. 2. (आ)

(1)

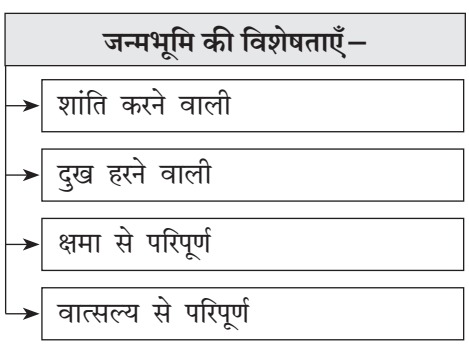

(2) भारतमाता, तुम क्षमाशील हो। अपनी संतानों के लिए तुम्हारा हृदय दया की भावना से परिपूर्ण है। तुम कल्याणकारी हो। तुम सुधामयी हो। तुम्हारा हृदय वात्सल्य से परिपूर्ण है। तुम प्रेममयी हो। तुम समस्त वैभवों से युक्त हो। तुम पूरे विश्व का पालन करती हो। सभी के दुखों को दूर करती हो। तुम हमारे भय का निवारण करती हो। शांति करती हो और हर प्रकार का सुख हमें देती हो।

प्र. 3. (1) (i) शीतावकाश।

(ii) विद्यापीठ।

(2) (i) **तो :** अगले दिन सेठ आया तो साधु का कहीं पता नहीं था।

अथवा

(ii) **जिधर :** जिधर पानी का मन चाहता है, उधर बहता है।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
तपोबल	**तपः + बल**	**विसर्ग संधि**

अथवा

सज्जन	सत् + जन	**व्यंजन संधि**

(4) (i) पैर पकड़ना।

वाक्य : बकुल ने अपनी बदतमीजी के लिए पिता जी के पैर पकड़े।

अथवा

(ii) (1) मन मारना।

अर्थ : इच्छा को दबाना।

वाक्य : राजू को मेले में जाने का बहुत मन था, लेकिन पिता जी के मना कर देने के बाद वह मन मारकर रह गया।

(2) कान के परदे फाड़ना।

अर्थ : बहुत शोर करना।

वाक्य : पड़ोस से आती लाउडस्पीकर की आवाज कान के परदे फाड़ रही थी।

(5) (i) अपूर्ण वर्तमानकाल।

(ii) (1) गिलोय की कलियाँ आँखों को सुख दे रही थीं।

(2) आप कहाँ उतरते हैं।

(6) (i) सरल वाक्य।

(ii) आपको कोई तकलीफ न हो।

प्र. 4. (अ) तथा **(आ)**

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।